ऊर्जा के छायावादी कवि: विजय कृष्ण देव तैलंग

*** डॉ. शोभना जैन**

यर्थाथवादी चेतना में उनका विश्वास था । वे टूटन और घुटन भी जिंदादिली से भोगने के हामी थे, किन्तु कहीं–कहीं पर उनकी कुछ एक रचनाएं निराशावादी सी लगती हैं । शयद वह उनकी हताश प्रवृत्ति के कारण नहीं, बल्कि सामाजिक आचरणों के कारण उत्पन्न दुष्टचिन्ताओं का ही परिणाम हो सकती हैं । फिर भी एक तटस्थ आचोलक उनकी कविता में कहीं कहीं निराशा, पलायन वादी प्रवृत्ति देखेगा ही । इसका अर्थ यह नहीं कि कवि सम्पूर्ण रूप से निराशावादी हैं वैसे उनकी ''मरघट'' जैसी कविता उनकी जीवन्तता का प्रमाण है ।

पद्य साहित्य–1. छायावादी कविताएं 2. प्रगतिवादी कविताएं 3. प्रयोगवादी कविताएं 4. नयी कविता 5. गीत 6. मुक्तक एवं क्षणिकाएं। गद्य साहित्य के संबंध में वह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता हैं कि लेखक का मन इस ओर इतना नहीं रमा है, जितना काव्य सर्जना में, फिर भी जो गद्य साहित्य उपलब्ध है, उसे अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से निम्नानुसार बांट सकते हैं– 1.निबंध 2.व्यंग्य 3.कहानी

कविताः– कविता जीवन से जुड़ी होती है, उसमें मानवीय जीवन की समस्याएं कुंठाएं, ह्रास, परिहास, सुख–आनंद, वितृष्णाएं सभी कुछ समाविष्ट होती हैं । यदि कोई कविता जो जीवन से संबंद्ध नहीं है तो वह मृत होती है, तभी तो विभिन्न विद्वानों ने कविता के संबंध में अपने पृथक–पृथक मत दिये हैं–

अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि वर्ड सर्वथ का विचार है कि–

"Poetry is the spontaneows over flow of power ful feelings it takesa origin a from emotions recollecte in trangvillity"

''कविता प्रबल अनुभूतियों का सहज उद्वेग है जिसका स्त्रोत शांति के समय में स्मृत मनोवेगो से फूटता है'' ।

इसी प्रकार अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि ''शैली'' ने कविता के संबंध में अपने विचार निम्नानुसार व्यक्त किये हैं –

Poetry is the record of the besat and happienst noments of the happiesat and besa ninds.

जब कि हिन्दी के प्रख्यात छायावादी कवि ''सुमित्रानंदन पंत'' ने कविता के संबंध में अपना दृष्टिकोण बहुत ही स्पष्ट व्यक्त किया है –

''वियोगी होगा पहला कवि/आह से उपजा होगा गान/निकल कर आंखों से चुपचाप/वही होगी कविता अनजान।''

मेंथ्यू आर्नल्ड ने तो कविता को जीवन की मूलभूत आलोचना स्वीकार किया है । लगता है कि तैलंग जी की कविता में जहां पंत की करूणा है वहीं शैली की सुखपूर्ण घड़ी का लेखा ''वर्डसर्वथ'' के अनुरूप मूल जीवन की आलोचना उनमें छिपी हुई है । वैसे कविता ''भवभूति'' के अनुसार कविता सुख की नहीं करूणा की होती है – ''एको रसः करूण एव निमित्र भेदात्'' के अधिक निकट तैलंग जी की कविता है उसमें करूणा का समावेश सुख की घड़ियों से अधिक है । तभी तो उनकी निम्न पंक्तियों में करूणा फूटी पड़ती है –

''करवटें रात भर लिखतीं हैं चादर पर जो भी कवितायें /उन सारी कविताओं में जितनी हैं आंसू से गीली हैं/आती है नींद मगर ऐसे जैसे कोई टूटी टहनी हिलती/

इस प्रकार अन्य बहुत सी रचनाऐं करूणा में आंकठ डूबीं है तथा तैलंग जी के कवि स्वरूप को उजागर करतीं हैं । उनका काव्य सामायिक परिस्थितियों, पूर्व एवं तत्कालीन साहित्यिक चिंतन धाराओं से युक्त है ।

छायावाद एक दृष्टि में :–रीतिकालीन साहित्य की ऐन्द्रिकता, अश्लीलता एवं स्थूल सौन्दर्य वर्णन के विरोध में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा प्रादुर्भूत एवं महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा पोषित एवं परिवर्द्धित सुधार वादी मनोवृत्ति के कारण काव्यात्मा नैतिकता के आवरण से स्वाभाविक आकर्षण खो बैठी थी । द्विवेदीकालीन काव्य में इतिवृत्तात्मकता के श्री गणेश से इस काल की कविता लोकानुभूत से परे हो गई थी।

छायावाद का नाम कब और कैसे पड़ा तथा उसका काल कब से कब तक माना गया, इस विवेचन में न पड़कर इतना ही मानकर चलना पर्याप्त है कि यह छायावाद की नूतन शैली अंग्रेजी तथा बंगला साहित्य के माध्यम से हिन्दी में आई । स्व. तैलंग जी के काव्य में छायावादी तत्व विद्यमान हैं या नहीं जानने के लिये उनकी (छायावाद की) विशेषताओं को आचार्यों एवं कवियों के परिप्रेक्ष्य में जनपर्याप्त होगा। सुश्री महादेवी वर्मा के शब्दों में – ''छायावाद ने मनुष्य के ह्रदय और प्रकृति के उस संबंध में प्राण डाल दिये है जो प्राचीनकाल के बिंब प्रतिबिंब रूप से चला आ रहा था और जिसके कारण मनुष्य को अपने दुःख में प्रकृति उदास और सुख में पुलकित जान पड़ती थी । छायावाद की प्रकृति घटकूप आदि में भरे जल की एक रूपता के समान अनेक रूपों में प्रकट एक महाप्राण बन गई । अतः अब मनुष्य के अश्रु, मेंघ के जलकण और पृथ्वी के ओस बिन्दुओं का एक ही कारण, एक ही मूल्य हैं ।'' कुछ विद्वान – अस्पृश्यता को ही छायावाद मानते हैं और कुछ ''रोमांसवाद'' के भारतीय संस्करण को छायावाद मानते हैं । उक्त आचार्य एवं कवियों के मन्तव्यों से निम्न निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि छायावाद आधुनिक युग की विभिन्न विचार–धाराओं तथा नूतन शैली का समन्वित रूप है । संक्षेप में छायावादी काव्य धारा के दो पक्ष है –

(1) भावगत :– भाव विकास की दृष्टि से छायावाद का क्षेत्र अति व्यापक एवं विस्तृत है जिसमें कुछ प्रमुख प्रवृत्तियां निम्न लिखित है–(1) दृखवाद (2) प्रकृति प्रेम (3) सौंदर्य

*** सहायक प्राध्यापक हिन्दी, शासकीय महाविद्यालय, सारणी**

उपासना (4) प्रेम भावना (5) जीवन दर्शन (6) पलायन वादिता (7) आत्माविव्यंजन, व्यक्तिवाद एवं निराशा।

(2) शैलीगतः—छायावादी कवि ने जिस प्रकार भावगत प्राचीन रूढ़ियों से हटकर चला है उसी प्रकार वह शैलीगत परम्परा से युक्त होकर चला है—प्रमुख विशेषताएँ निम्न है —(1) भाषा और शब्द चयन (2) अलंकार विधान (3) शब्द शक्ति विधान (4) छन्द विधान एवं संगीतात्मकता (5) चित्रात्मकता स्वर्गीय विजय तैलंग जी के काव्य में छायावादी अभिव्यक्तिः— तैलंग जी की अधिकांश रचनाएँ गीत काव्य के अन्तर्गत आती हैं छायावादी रचनाओं की तरह उसमें ध्वनयात्मकता, लावपिकता, सौन्दर्य, प्रतीक विधान तथा उपचार वक्रता के साथ स्वानुभति की निवृत्ति जैसी विशेषताएँ अंर्तनिहित हैं अतः उनके कुछ गीतों को छायावादी प्रवृत्तियों के अनुरूप परखने का प्रयास किया गया है ।

जैसे—कोई गीत सुनाओ साथी रात कटे/रात कटे/बीत गये जाने कितने दिन सूने कमरे में/जैसे कोई कैदी गुमसुम बैठा पहरे में/खिड़की खुलवाओ साथी रात कटे/रात कटे/कितना दुःख भोगेंगे आखिर पिछली भूलों से/

यहां तैलंग जी की कविता में कवि ने अपने निराश जीवन में भी कल्पना प्रेयसी को आमंत्रित कर आशा का संचार करना चाहता है तथा गुमसुम बनी कैद जिंदगी से ऊबकर नये संदेश प्राप्त कर फिर से कुछ करने की इच्छा मन में संजो रहा है

में तुम्हारे पास बैठा हूं/सामनेमधु पात्र है मेंरे/औंठ पर है प्यास बैठा हूं /दो घड़ी आंखे लगाये प्यार का काजल/चांद मुखड़े पर किये छाया बने बादल/गंध मय एकांत सिरहाने रखे है फूल/मन इन्द्र धनुषों रंगीलें भर रहा है धूल

उर्पयुक्त गीत में भी कवि ने रूमानी भावनाओं को अभिव्यक्त किया है । उसकी प्रेयसी कल्पना—जगत में रहती है । वह उसके पास बैठा हुआ है । जीवन की सारी खुशियों को प्राप्त कर लेना चाहता है । अब तक की निराशा से हारा थका वह बोझिल जिंदगी जीता रहा किन्तु प्रेयसी सान्निध्य ने जैसे उसे सारी खुशियां समेंटकर दे दी हो तभी तो उसे एकांत भाने लगया है ।

जिंदगी चलती उतारों में चढ़ावों में/साथ देना चाहिये तुमको घुमावों में/में कहूँगा बहुत मीठा है तुम्हारा साथ/तुम हमेंशा मुसकरा कर टाल दोगी बात।/में शपथ लूँ तो समझती हो उसे तुम झूठ

रीतिकालीन कवियों ने जो भी लिखा, उससे हटके छायावादी कवि ने नये ढंग से सोचना समझना प्रारंभ किया । नये प्रतीक और बिंब भावाभिव्यक्ति के लिये चुने गये ।

इसी प्रकार महादेवी वर्मा ने भी व्यथा से पीड़ित होकर कहा है—

में नीर भरी दुःख की बदली/विस्तृत नभ का कोना—कोना/मेंरा न कभी अपना होगा/परिचय इतना इतिहास यही'

बच्चन भी यह मानते हैं कि सांसारिक विषमताएं दूर करने की सार्मथ्य मनुष्य में नहीं है तभ तो वे कहते है —

में जीवन में कुछ कर न सका/जग में अंधियारा छाया था/में ज्वाला हूँ लेकर आया था/मेंने जल कर दी आयु विता/पर जगती का तम हर न सका

उपर्युक्त कथन लगभग सभी छायावादी कवियों की अंतः निहित निराशा को प्रकट करते हैं । कविवर तैलंग जी की निम्न पंक्तियों में भी इसी प्रकार की निराशा फूट कर सामने आई है—

में मांगू तुम प्यार न देना/फूली हुई बहार न देना/मधु की बातें कौन करे अब/जीवन मरू की धूल बन गया/फूलों की बस्ती में रहकर/ऐसा मिटा बबूल बन गया/मेंरे इस एकांत भवन में/

इस प्रकार की रचनाएं निराशा में भी अंतस्थ भावनाओं को उद्दीप्त करती हुई कवि की भाव—भूमि में आशा खोजती प्रतीत होती हैं । ये निराशा के अधिक नजदीक दिखायी पड़ती हैं । व्यक्ति में इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि वह दुःख का अंत कर सके इसलिये अपनी हताशा को भोगते रहने के लिये वह इस तरह की कविताएं लिखता है जिसमें असमर्थता, निराशा, स्पष्ट दिखाई देने लगती है। छायावादी कवियों ने प्रकृति को एक नवीन दृष्टिकोण से ही देखा है ।

बीती विभावरी जाग री।/अम्बर पनघट में डूबो रही, तारा घट उषा नागरी,/खग कुल कुल कुल सा बोल रहा,/किसलय का अंचल डोल रहा,/

इसी प्रकार निराला जी ने भी संध्या को सुंदरी के रूप में चित्रित कर अनुपम चेतन सौंदर्य की झांकी प्रदर्शित की है —

दिवसा—वसान का समय/मेंघमय आसमान से उतर रही है/यह सन्ध्या सुन्दरी परी सी/धीरे—धीरे—धीरे।

कविवर विजय जी ने भी प्रकृति को प्रतीक रूप में अपनाया है —

पहने मेंघों के वस्त्र सुकोमल गीले से/मस्तक पर बांधे मुकुट विजलियों वाल/पपीहे का पिहू पिहू अक्षरों पर साधे/में चला इन्द्र धनुषों की पहने माला/सांसों में चलते थे झकोर पुरवैया के

कवि ने उर्पयुक्त पंक्तियों में प्रकृति के प्रतीक और बिंब अपनी स्वप्निल कल्पनाओं की पूर्ति हेतु चुने हैं तथा सहज प्राकृतिक सौंदर्यानुभूति में अपनी आंनद प्रद जिंदगी के स्वप्न देखे हैं । वह इन्द्र धनुषी खुशियों को साथ में लिये हुए पुरवैया की झकोर सी अविराम गति के साथ यशस्वी विजलियों का मुकुट पहने निरंतर बढ़ रहा है।

लो यह आया बंसत, फूलों की बस्ती में/नाची कलियां, भीगें भौंरे गुनगुना उठे/झुक गई लता, सुमनों के गहने बोझीले/पत्तों के घुंघरूं डालों पर झुनझुना उठे।/धरती की छाती भरी नवीन अंकुरों से/महकी आशाओं की भदमाती फुल बगिया/

इस कविता में कवि ने बसंत के आगमन पर प्रकृति परिवर्तन की बात तो कही ही है ।

टहनियों के शीश पर/चैत के आशीश बन कर/लद गये है कत्थई/सांवरे, सुआ पंखी, सुनहरे बोर/फुनगियॉ तक लद गये हैं झोर झोर/सांबरे पीले सुआपंछी सुनहले बौर/आ चलें देखें/जरा उन आम्र कुंजों के तले की छांव में/

उपर्युक्त कविता में प्रेम प्रकृति सौंदर्य दोनों ही अनुभूतियॉ एक साथ देख्ने को मिलती हैं। कवि ने बसंती प्रकृति के सौंदर्य को एक साथ पीने का प्रयत्न किया है ।

सौंदर्य के प्रति सहज आकर्षण मानवीय प्रवृत्ति है यदि इसे एक प्रकार की साधना मान लिया जाय तो कोई अतिशयोक्ति न होगी तभी तो कवि की कल्पना में सौंदर्य का समावेश होता है चाहे उसने किसी प्रकृति के सौंदर्य की बात कही हो या किसी पुरूष और स्त्री की सौन्दर्यानुभूति की हो उसकी कविता बिना सौंदर्य की कल्पना के अधूरी सी रह जाती है ।

शिला खण्ड पर बैठी यह नीलांचल मृदुलहराता था/मुक्त बंध संध्या समीर सुन्री संग/कुछ कुछ चुप–चुप बातें करता जाता और मुस्कराता था/विकसित असित सुवासित उड़ते उसके/

इन पंक्तियों में जीवन की सहजता स्पंदन शीलता तथा आंनदानुभूति है जो मन को आकर्षित कर उठती है ।

कविवर विजय जी की छायावादी रचनाओं में भी सौनदर्यानुभूति के सहज ही दर्शन किये जा सकते है तथा उनमें छायावादी कवियों की तरह अंतस्थ अनुभूतियों की पराकष्ठा देखने को मिलती है ।

''पहने हुये बादलों की पोषाक सकोमल गीला/धारे इन्द्र धनुषो की माला नीली पीली/हाथों में चकमदार बिजली के चंचल कंगन/बगुलों की पांतों का मोहक श्वेत कमल का बंध्न/एक हाथ में लिये हुये धरती की हरयाली/

इस कविता में शब्द शिल्प तथा चित्रात्मकता एवं अलंकृत शैली अपने आप में अनुठी है, जो कवि के कवि रूप को प्रदर्शित करने में समर्थ है तथा सहज ही सौंदर्यानुभूति कराने की क्षमता इन पंक्तियों में है । प्रेम तो सृष्टि के मूल में ही छुपा हुआ है । संस्कृत में कहा है–''कामश्तग्रे समवर्त ताग्रे'' अर्थात् काम ही सृष्टि का मूल हैं बिना काम के सृष्टि की कल्पना ही नहीं की जा सकती ।

पन्त जी की कविता इसका प्रमाण है –

प्रिये कलि कुसुम कुसुम में आज/मधुरिमा, मधु सुषमा सु विकास/तुम्हारी रोम–रोम छवि व्याज/छा गया मधुवन में मध्ुमास ।''

इस दृष्टि से कविवर विजय की रचना भी देखी जा सकती है और उनमें प्रेम जन्य भावनाओं को निरखा परखा जा सकता है।

''चुम्बनों से हो रहे गीले अधर दल/तृप्ति का जल प्यास बनता जा रहा है/तुम कि जैसे पूर्णिमा की चांदनी है/यह ह्रदय आकाश बनता जा रहा है/हम मिलन को जग पर आंक देंगे/

कवि का अपना चिंतन उसे किसी सिद्धांत विशेष से जोड़ देता है तभी तो वह जीवन की मौलिक प्रवृत्तियों की ओर आकर्षित होकर काव्य का सृजन करता है, उसकी रचना में जीवन की प्रवृत्तियां समाविष्ट हो जाती हैं कभी–कभी वह इतना भावुक हो उठता है कि वह मधुर स्मृतियों और कल्पनाओं में डूब जाता है तो कभी वह मधुरता से हट कर साधरण जीवन व्यतीत करने वाले श्रमिक मजदूर सर्वहारा वर्ग की हमदर्दी में यर्थाथ भावनाओं को प्रकट करने लगता है। तो दूसरी ओर इस प्रकार की कविता जीवन को सर्वांगीण रूप से जागृत करने के लिये भी कवि लिखता है –

जागो, पहचानो अपने को/मानव हो समझो निज गौरव,/अन्तस्तल की आंखे खोलो।/देखो निज अतुलित बल वैभव।/अहंकार और स्वाधिकार दो पृथक पृथक पथ है बंध्ी/आओ हथकड़ियां तड़कादूं, जागो रे नत शिर बन्दी।

इस प्रकार तैलंग जी की छायावादी रचनाओं में जहां मध्ुर कल्पना शीलता एवं अभिव्यंजना देखी जा सकती है, वहीं आम आदमी के उत्थान में उनकी समर्पण भावना तथा कुछ अजूबो कर देने की सामर्थ्य देखी जा सकती है –

''में आकाश सरीखा फैलूं/जहां जहां पर धूप चाहिये/में तप कर दूं/जहां जहां आलोक चाहिये/में दीपक की अहर्निश/अपने तन की बूंद–बूंद को/अर्पित कर दूं/अधरों पर की ज्योति शिखा को/

विजय कृष्ण जी ने यद्यपि छायावादोत्तर काल में लिखना प्रारम्भ किया था । यह बड़ा सौभाग्य था कि कोई भी किशोर कवि जब अपनी युवावस्था में रोमांश से भरपूर होता है, तो उसकी रचनाओं में भावुकता, समर्पण, उच्छवास और एक वर्ग कल्पणाशील दूनियां का स्वप्न समाया रखता है ।

में मांगू तुम प्यार न देना।/मेंरे उजड़े हुये बाग में/फूली हुई बहार न देना।/मधु की बातें कौन करे अब/जीवन मरू की धूल बन गया/फूलों की बस्ती में रह कर/ऐसा मिटा बबूल बन गया।

विजय जी ने कोई महाकाव्य नहीं लिखा और खण्डकाव्य लिखा भी था तो उसका कोई पता नहीं है । फिर भी उनकी छायावादी कविताओं का अध्ययन करने से हम भाव गत एवं शैलीगत दोना प्रकार की प्रवृत्तियां मिलती हैं । इसलिये हम कह सकते है कि उन्होंने सुमित्रानंदन पंत महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी, निराला जैसी सामर्थ्य पैदा करने का प्रयास किया था लेकिन वह असमय ही काल के गाल में समा गये।

सन्दर्भ–

मूल ग्रंथ :–स्व. विजय तैलंग जी का हस्तलिखित उपलब्ध साहित्य (1) साहित्य रूप–राम अवध द्विवेदी (2) काव्य शास्त्र–डॉ. भागीरथ मिश्र (3) हिन्दी गीति काव्य– श्री ओम प्रकाश अग्रवाल (4) वाड.मय विमर्श–विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, (5) हिन्दी साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचंद्र शुक्ल (6) नयी कविता–डॉ. कान्ति कुमार जैन (7) हिन्दी साहित्य और विभिन्न वाद–श्री रामजी लाल बधोलिया (8) अप्रकाशित साहित्य–श्री विजय कृष्ण देव तैलंग